गणेश चालीसा इन हिंदी

HANUMAN CHALIASA

॥ दोहा ॥

जय गणपति सगुण सदन कविवर बदन कृपाल।

विघ्न हरण मंगल करण जय जय गिरिजालाल ॥

॥चौपाई॥

जय जय जय गणपति राजू ।

मंगल भरण करण शुभ काजू ॥

जय गजबदन सदन सुखदाता।

विश्व विनायक बुद्धि विधाता ॥

वक्र तुण्ड शुचि शुण्ड सुहावन।

तिलक त्रिपुण्ड भाल मन भावन ॥

राजित मणि मुक्तन उर माला।

स्वर्ण मुकुट शिर नयन विशाला ॥

पुस्तक पाणि कुठार त्रिशूलं।

मोदक भोग सुगन्धित फूलं ॥

सुन्दर पीताम्बर तन साजित।

चरण पादुका मुनि मन राजित ॥

धनि शिवसुवन षडानन भ्राता।

गौरी ललन विश्व-विधाता ॥

ऋद्धि सिद्धि तव चंवर डुलावे।

मूषक वाहन सोहत द्वारे ॥

कहौ जन्म शुभ कथा तुम्हारी।

अति शुचि पावन मंगलकारी ॥

एक समय गिरिराज कुमारी।

पुत्र हेतु तप कीन्हा भारी ॥

भयो यज्ञ जब पूर्ण अनूपा।

तब पहुंच्यो तुम धरि द्विज रूपा।

अतिथि जानि कै गौरी सुखारी।

बहु विधि सेवा करी तुम्हारी ॥

अति प्रसन्न है तुम वर दीन्हा।

मातु पुत्र हित जो तप कीन्हा ॥

मिलहि पुत्र तुहि बुद्धि विशाला।

बिना गर्भ धारण यहि काला॥

गणनायक गुण ज्ञान निधाना।

पूजित प्रथम रूप भगवाना ॥

अस कहि अन्तर्धान रूप है।

पलना पर बालक स्वरूप है।

बनि शिशु रुदन जबहिं तुम ठाना।

लखि मुख सुख नहिं गौरी समाना ॥

सकल मगन सुखमंगल गावहिं।

नभ ते सुरन सुमन वर्षावहिं ॥

शम्भु उमा बहुदान लुटावहिं।

सुर मुनि जन सुत देखन आवहिं ॥

लखि अति आनंद मंगल साजा।

देखन भी आए शनि राजा ॥

निज अवगुण गुनि शनि मन माहीं।

बालक देखन चाहत नाहीं॥

गिरिजा कछु मन भेद बढ़ायो।

उत्सव मोर न शनि तुहि भायो ।

कहन लगे शनि मन सकुचाई।

का करिहौ शिशु मोहि दिखाई।

नहिं विश्वास उमा कर भयऊ।

शनि सों बालक देखन काऊ ॥

पड़तहिं शनि दृग कोण प्रकाशा।

बालक सिर उड़ि गयो आकाशा॥

गिरिजा गिरी विकल है धरणी।

सो दुख दशा गयो नहिं वरणी ॥

हाहाकार मच्यो कैलाशा।

शनि कीन्ह्यों लखि सुत को नाशा॥

तुरत गरुड़ चढ़ि विष्णु सिधाए।

काटि चक्र सो गज शिर लाए॥

बालक के धड़ ऊपर धारयो।

प्राण मंत्र पढ़ शंकर डारयो ।

नाम गणेश शम्भू तब कीन्हे।

प्रथम पूज्य बुद्धि निधि वर दीन्हे ॥

बुद्धि परीक्षा जब शिव कीन्हा।

पृथ्वी की प्रदक्षिणा लीन्हा॥

चले षडानन भरमि भुलाई।

रची बैठ तुम बुद्धि उपाई ॥

चरण मातु-पितु के धर लीन्हें।

तिनके सात प्रदक्षिण कीन्हें ॥

धनि गणेश कहि शिव हिय हरषे।

नभ ते सुरन सुमन बहु बरसे ॥

तुम्हरी महिमा बुद्धि बड़ाई।

शेष सहस मुख सकै न गाई॥

मैं मति हीन मलीन दुखारी।

करहुँ कौन बिधि बिनय तुम्हारी ॥

भजत रामसुन्दर प्रभुदासा।

लख प्रयाग ककरा दुर्वासा ॥

अब प्रभु दया दीन पर कीजै।

अपनी शक्ति भक्ति कुछ दीजै ॥

॥ दोहा ॥

श्री गणेश यह चालीसा पाठ करें धर ध्यान। नित नव मंगल गृह बसै लहे जगत सन्मान ॥

संवत अपन सहस्र दश ऋषि पंचमी दिनेश। पूरण चालीसा भयो मंगल मूर्ति गणेश॥

HANUMAN
CHALIASA